विशारद प्रथम वर्ष
कथ्थक नृत्य

पूर्णांक : 400 न्यूनतम:180
शास्त्र :150 न्यूनतम : 52
क्रियात्मक: 250 (किया 200 मंच प्रदर्शन 50)
न्यूनतम :128

शास्त्र :

प्रथम प्रश्न पत्र

अंक: 75, न्यूनतम 26

१. नाट्य की उत्पत्ति (भरतानुसार) नाट्य का प्रयोग तथा नाट्य का प्रयोजन।
२. नवस्सों की परिभाषा ।
३. नायक के चार भेद: धीरोद्धत, धीरललित, धीरोदात्त, धीरप्रशांत ।
४. चार प्रकार की नायिका और उनकी परिभाषा अभिसारिका, खण्डिता, विप्रलब्धा तथा प्रोषितपतिका
५. दशावतार में से मत्स्य, वराह, कूर्म तथा नरसिंह अवतार की कथा तथा उनकी मुद्राएँ ।
६. ताल के दस प्राणों की व्याख्या ।
७. भरतनाट्यम्, मणिपूरी तथा कथकली नृत्य की जानकारी। इनकी वेशभूषा तथा वाद्यों का ज्ञान ।
८. तीनताल, झपताल, धमार में आमद बेदम तिहाई, फरमाईशी परन तथा चक्करदार परन, तिपल्ली तथा कवित्त को लिपिबद्ध करना ।
९. अ) गुरु शिष्य परंपरा का महत्त्व ।
२. ब) शिष्य के गुण तथा गुरु के प्रति उसका कर्त्तव्य ।

द्वितीय प्रश्न पत्र

अंक: 75, न्यूनतम 26

१. रस की निष्पत्ति, स्थाई भाव, भाव, विभाव, अनुभाव, व्यभिचारी भाव आदि की परिभाषा ।
२. निम्नलिखित पारिभाषिक शब्दों का ज्ञान
   तिपिली, कवित्त, फरमाईशी परन, कमाली परन, बेदम तिहाई, गॉट, अनुलोम, प्रतिलोम, भ्रमरी, न्यास विन्यास ।
३. कथक नृत्य में प्रयुक्त होने वाले निम्नलिखित गीत प्रकारों की व्याख्या: अष्टपदी, धृपद, ठुमरी, चतुरंग, त्रिवट, तराना, चैती, कजरी, होरी।
४. कथक नृत्य में नवाब वाजिद अली शाह तथा रायगढ़ के महाराज चक्रधर सिंह का योगदान ।

५. रास ताल (13), धमार (14), गजझंपा, (15), पंचम सवारी (15) में आमद, तिहाई, तोडा, चक्करदार परन तथा कवित्त आदि को लिपिबध्द करना।
६. जीवनियाँ : नटराज गोपीकृष्ण, कथ्थक सम्राज्ञी सितारा देवी, पंडित दुर्गालाल व गुरु कुन्दनलाल गंगानी ।
७. निबन्ध ज्ञान :
   i. रास तथा कथ्थक
   ii. ठुमरी का कथ्थक नृत्य से सम्बन्ध
८. नर्तक / नर्तकी के गुण और दोष ।

क्रियात्मक :

१. सरस्वती वंदना
२. तीनताल के अतिरिक्त झपताल में विशेष तैय्यारी ।
३. गजझंपा या छोटी सवारी (पंचम सवारी) तथा रास और धमार में ठेके की ठाह, दुगुन, ठाठ, आमद, दो तोड़े, एक परन तथा एक कवित्त का प्रदर्शन ।
४. गतनिकास : आँचल, नाव, घूँघट के प्रकार ।
गतभाव: पिछले वर्षों के सभी गतभावों का प्रदर्शन तथा द्रौपदी चीर हरण।
५. ठुमरी भाव (शब्द, राग, ताल की जानकारी आवश्यक)
६. एक तराना या त्रिवट किसी ताल में ।
७. हाथ से ताली लगाकर सभी बोलों की पढन्त
८. अभिसारिका, खण्डिता, विप्रलब्धा तथा प्रोषितपतिका नायिका पर गतभाव या इन से संबंधित पद या ठुमरी पर भाव नृत्य ।
९. तीनताल या झपताल की तत्कार में लड़ी या चलन ।
१०. अभिनय दर्पण का श्लोक"आंगिक भुवनं यस्य..."
११. पिछले संत कवियों को छोड़कर अन्य किन्हीं दो संत कवियोंके कवित या भजन पर भाव दिखाना तथा दोनों संत कवियों का परिचय देना।

- **मंच प्रदर्शन** : स्वतंत्ररूप में विधिवत मंचप्रदर्शन अनिवार्य (20 से 30 मिनट तक)

विशारद प्रथम वर्ष :
कुल मौखिक-२५०
समय: क्रियात्मक ५० मिनट व मंचप्रदर्शन २० से ३० मिनट प्रति छात्र

विशेषताओं सहित गजझंपा/छोटीसवारी/ रासताल / धमार ताल में तीनताल, झपताल वंदना ठाठ आमद तोडे परन कवित्त
२० १० १० १० १० १० १०

गतनिकास गतभाव ठुमरी तराना नायिका भाव तीनताल या झपताल या त्रिवट लडी / चलन
२० २० १० १० १० १० **कुल अंक २५०**

ठेके की ठाठ पढन्त भजन या संत उपज दुगून कवि के कवितापर भाव
१० १० १० १०

मंच प्रदर्शन : ५०

ताल, लय अभिनय वेशभूषा रंगमंच प्रस्तुती पद्धत
१५ १५ १० १०